MAHAMUL03014/13/1/2012-TC
Volume 2 - Special Issue - 2 - Jan - 2014

Online : 2320-8341
ISSN : 2320-6446

RESEARCH FRONT

An International Multidisciplinary Research Journal
Special Issue - 2

''स्वावलंबी शिक्षा यही हमारा ब्रीद''- कर्मवीर

रयत शिक्षण संस्था का,

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

त.माण.,जि.सातारा

हिंदी विभाग

एवं

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली तथा

सातारा जिला हिंदी अध्यापक मंडल, सातारा

के संयुक्त तत्त्वावधान

में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

* विषय *

''२१ वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में व्यंग्य''

दि. ६ (सोमवार) एवं ७ (मंगलवार) अक्तूबर, २०१४

प्रकाशक

प्राचार्य, डॉ.चंद्रकांत खिलारे

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

संपादक

प्रा.डॉ.बाळासाहेब बलवंत

संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी विभागाध्यक्ष,दहिवडी कॉलेज दहिवडी

सह-संपादक

प्रा.सोमनाथ कोळी

सहयोगी प्राध्यापक

* आयोजक *

हिंदी विभाग, दहिवडी कॉलेज दहिवडी

Scanned by CamScanner

MAHAMUL03014/13/1/2012-TC
Volume 2 - Special Issue - 2 Jan - 2014
ISSN: 2320-

RESEARCH FRONT

An International Multidisciplinary Research Journal

Editorial Office
27B, Plot No. 17, Flat No. 5,
Shriramkunj Apartment
Yashwant Colony,
Camp Satara,
Maharashtra,
India.

Publisher
Mrs. M. S. Zodage
27B, Plot No. 17, Flat No. 5,
Shriramkunj Apartment
Yashwant Colony,
Camp Satara,
Maharashtra,
India.

Email
researchfront2013@gmail.com

Contact
Mobile: 09960544067
09561084067

Website
www.researchfront.in

Vol. 2, Issue -1
(Jan. 2014 to Mar., 2014)

Chief Editor
Dr. S. B. Zodage
Dept. of Geography
Chhatrapati Shivaji College, Satara,
Maharashtra,

Executive Editors
Dr. L. Joe Morgan
Associate Professor
Jacksonville State University,
Jacksonville, Alabama, USA.
Dr. Bhim Prasad Kafle
Assistant Professor
Dept. of Natural Science,
Kathmandu University,
Nepal Dr. Narsimhulu Sanke
Assistant Professor
Dept of Mechanical Engineering,
University College of Engineering,
Osmania University, Hydrabad.
Dr. S. T. Ingle
Professor & Director,
School of Environmental & Earth Sciences
NM University, Jalgaon (MH)
Dr. D. B. Panaskar
Professor & Head,
Environmental Sciences,
SRTM University, Nanded (MH)
Dr. V. B. Zodage
I/C Principal
SRTM College, Kudal,
Dist - Sindhudurg (MH)

Editors
Dr. P. A. Khadke
Assistant Professor,
School of Earth Sciences,
SRTM University, Nanded, (MS)
Dr. V. R. Veer
Assistant Professor,
Kisan Veer Mahavidyalaya
Wai, Dist - Satara (MS)
Dr. S. M. Suthe
CBS College, Hupari,
Tal - Hatkangale, Dist - Kolhapur (MH)
Mr. S. V. Karande
Assistant Professor,
Chhatrapati Shivaji College, Satara (MH)

Scanned by CamScanner

21	21 वीं सदी के गजलों में व्यंग्य	प्रा. सुश्री. जयश्री पाटील	86 – 92
22	सुरजपाल चौहान के कविताओं में व्यंग्य	डॉ. सुभाष राठोड	93 – 96
23	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	प्रा. सचिन जाधव	97 – 99
24	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	डॉ. एस.के. खोत	100 – 102
25	चंद्रसेन विराट के 'चुटकी चुटकी चाँदणी' दोहा संग्रह में व्यंग्य	प्रा. झेड.बी. मुलाणी	103 – 106
26	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	प्रा. मारूफ मुजावर	107 – 115
27	व्यंग्य कवी डॉ. जर्रा काझी के कविताआं में व्यंग्य	प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा	116 – 123
28	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	प्रा. मोहसीन बागवान	124 – 134
29	21 वीं सदी के कहानी साहित्य में व्यंग्य	प्रा.डॉ. भारत खिलारे	135 – 140
30	21 वीं सदी के कहानी साहित्य में व्यंग्य	प्रा. दत्तात्रय साळवे	141 – 144
31	स्नेहा ठाकूर के 'प्रथम डेट' कहानी में व्यंग्य	प्रा. सुनिल गायकवाड	145 – 146
32	सूर्यबाला की कहानी में चित्रित व्यंग्य	सुश्री. लक्ष्मी मनशेट्टी	147 – 150
33	21 वीं सदी के कहानी में सांस्कृतिक व्यंग्य	प्रा.डॉ. राजेंद्र भोसले	151 – 152
34	सूदर्शन प्रियदर्शन की कहानी 'अखबारवाला' में चित्रित व्यंग्य	डॉ. संजय चिंदगे	153 – 156
35	हरिशंकर परसाई के लघुकथाओं में व्यंग्य	डॉ. सुमित्रा पोवार / डॉ. बाबासाहेब पोवार	157 – 160
36	21 वीं सदी के निबंधों में व्यंग्य	डॉ. विनायक कुरणे	161 – 163
37	राम अवतार यादव के कहानियों में व्यंग्य	गणेश खवळे	164 – 166
38	व्यंग्य रचनाकार डॉ. सूर्यबाला	डॉ. बालासाहेब बलवंत	167 – 168
39	व्यंग्यकार माधव सोनटक्के	डॉ. विनायक शिंदे / श्री. अनंत वडघणे	169 – 172
40	ज्ञान चतुर्वेदी के 'खामोश! नंगे हमाम में है' में व्यंग्य	डॉ. संजय जाधव	173 – 176
41	'नावक के तीर' में व्यंग्य	डॉ. नितीन धवडे	177 – 180
42	सूर्यबाला के 'देशसेवा के अखाडे में' चित्रित व्यंग्य	डॉ. दत्तात्रय अनारसे	181 – 184
43	किसान अत्महत्या नामक यात्रानुमा	प्रा. डॉ. बी.एम. माने	185 – 190

Scanned by CamScanner

"किसान आत्महत्या" नामक यात्रानुमा निबंध संग्रह में निहित व्यंग्य

लेफ्ट. डॉ. बी. एम. माने

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय,

जुन्नर, जिला–पुणे ।

वर्तमान में **"व्यंग्य"** साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुका है । चाहे वह उपन्यास हो या कहानी और नाटक हो या निबंध । व्यंग्य के माध्यम से ही साहित्यकार समाज में प्रचलित विसंगतियों तथा विडंबनाओं पर प्रहार करता है और समाज को सही रास्ते पर ले जाने की कोशिश करता है । कभी वह हास्य के माध्यम से तो कभी व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक बुराईयों को समाज से निष्कासित करने की कोशिश करता है। जिस तरह से कहानी, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं में व्यंग्य का बोलबाला है, उसी तरह से निबंध विधा में भी वह अपनी छाप छोड़ता दिखाई देता है । वैसे तो भारतेंदु युग से ही हिंदी निबंधों में व्यंग्य का सिलसला शुरु हुआ और आज इक्कीसवीं सदी के निबंध साहित्य में वह अधिक फला–फूला दिखाई दे रहा है । आज वह सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक असंगतियों पर प्रहार करता हुआ विकास के चरम पर पहुँच चुका है ।

"व्यंग्य" को आजकल अंग्रेजी के 'सटायर' शब्द का पर्यायवाची माना जाता है, जिसका मानविकी पारिभाषिक कोश में अर्थ है – "व्यंग्य का लक्ष्य मानवीय दुर्बलताओं पर कटाक्ष करके उन्हें उभारना और सुधारना होता है ।"[१] व्यंग्य को अनेक विद्वानों ने परिभाषित करने की भी कोशिश हैं , परंतु चंद विद्वानों की ही परिभाषाएँ ज्यादात्तर मान्य हैं और उनमें व्यंग्य को पूरी तरह से समेटने की कोशिश की हुई दिखाई देती है। अत: उन विद्वानों की परिभाषाओं को देखना यहाँ उचित प्रतीत होता है । व्यंग्य के बादशाह हरिशंकर परसाई जी लिखते हैं –"व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है , जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों–मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है ।"[२] वहीं दूसरी ओर श्रीलाल शुक्ल जी व्यंग्य को एक हथियार के रूप स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि "मैंने व्यंग्य को आधुनिक जीवन और आधुनिक लेखन के एक अभिन्न अस्त्र और एक अनिवार्य शर्त के रूप में पाया है ।"[३] वहीं काका हाथरसी कहते हैं कि "जिस पर व्यंग्य–बाण छोड़ा जाये वह तिलमिलाकर कुछ सोचने के लिए मजबूर हो जाये तो समझिये व्यंग्य और व्यंग्यकार सफल हुए ।"[४] उक्त तीनों परिभाषाओं को देखने के बाद व्यंग्य की धारणा स्पष्ट हो जाती है। एक तो व्यंग्य मानव जीवन से साक्षात्कार करता हुआ उसकी आलोचना भी करता है और व्यक्ति या समाज जीवन में फैली हुई असंगतियों को अपने पैने पन से उजागर करता है । साथ ही वह उन विसंगतियों एवं मिथ्याचारों पर जबरदस्त प्रहार भी करता है। ताकि जीवन बेहतर हो जाए और समाज में जो अनैतिकाएँ एवं बाहयाचार, विषमताएँ एवं पाखंड फैले हुए हैं, उनका नाश हो जाए । जिन व्यक्तियों और समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक असंगतियों पर व्यंग्य का तौर चलाया है, उसे अपनाने वाले तिलमिलाकर अपनी प्रवृत्ति पर सोचने के लिए मजबूर हो जाए । कुल मिलाकर यही व्यंग्य का प्रमुख प्रयोजन है और इससे ही व्यंग्य को पूरी तरह से समझने में आसानी होती है ।

Scanned by CamScanner

वैसे तो हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य की धारा भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, सरदार पूर्णसिंह, चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी', बाबू गुलाबराय , आचार्य रामचंद्र शुक्ल, माखनलाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि, बेढब बनारसी , सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, डॉ. शंकर पुणतांबेकर, लतीफ घोंघी, के. पी. सक्सेना, बुलंदशेखर तिवारी आदि निबंधकारों के निबंधों से प्रवाहित होती हुई डॉ. बापूराव देसाई तक आती है । उक्त सभी नियंधकारों ने अपने निबंधों में समाज में समय–समय पर प्रचलित सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मिथ्याचारों एवं अनावश्यकताओं पर करारा व्यंग्य किया है और समाज में फैले रोगी विचारों एवं आचारों को दूर करने का सफल प्रयास किया है । इसी की एक कड़ी के रुप में डॉ. बापूराव देसाई का **'किसान आत्महत्या'** नामक हास्य–व्यंग्यात्मक यात्रानुमा निबंध संग्रह वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दुर्दशा पर हास्य–व्यंग्य के माध्यम से महीन मार करता है । इसका प्रकाशन सन् २०१० में हुआ है और इसमें तकरीबन बीस यात्रा वृतांतों के समान निबंध संग्रहीत हैं। इसे यात्रानुमा निबंध संग्रह इसलिए कहा जाना चाहिए क्योंकि इसमें डॉ. बापूराव देसाई ने कई स्थानों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ किए गए साक्षात्कारों और यात्राओं के अनुभवों को व्यंग्यात्मक तरीके से निबंधों के रुप में रखा है । इस संग्रह का पहला ही निबंध जो व्यंग्य की तीखी मार लिए हुए है, जो किसानों को आत्महत्या करने के लिए प्रवृत्त करने वाले लोगों को यह विचार करने के लिए मजबूर बना देता है कि जो किसान पूरे देश के लिए अनाज पैदा करता है , जिसके कारण पूरा भारतवर्ष अपना पेट भर रहा है , उसकी आज इतनी दुर्दशा क्यों हुई ? उसकी दुर्दशा के लिए जिम्मेदार कौन है ? अगर इसके लिए व्यवस्था जिम्मेदार है तो व्यवस्था को उनके सुधार के लिए कौन–से कदम उठाने होंगे ? और किसान को भी अपनी हालत सुधारने के लिए क्या करना चाहिए ? आदि सवालों पर लेखक कभी व्यंग्यात्मक तरीके से और कभी गंभीर होकर चिंतन करता नजर आता है।

प्राचीन काल से लेकर आजतक और आगे भी किसान के महत्त्व को हम अस्वीकार नहीं कर सकते । प्राचीन जमाने में एक कहावत थी– 'उत्तम खेती, मध्यम व्यापार और कनिष्ठ नौकरी', लेकिन वर्तमान में किसान की दैयनीय अवस्था देख कर तथा उसके समाने पैदा होने वाली भिन्न–भिन्न समस्याओं के कारण यह कहावत बदल चुकी है । आज यह 'उत्तम नौकरी , मध्यम व्यापार और कनिष्ठ खेती' के रुप में तब्दील हो चुकी है। केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में किसान की हालत सुधारने के बड़े–बड़े वादे किए जाते हैं । उसके महत्त्वपूर्ण स्थान का बखान बेबाकी से किया जाता है । कहीं एकाध वर्ष उनकी उन्नति के वर्ष के रूप में घोषित किया जाता है। उनकी तरक्की हो इसलिए हर देश अनेक योजनाएँ तैयार करता है । भारतवर्ष में भी किसानों की उन्नति के लिए अनेक योजनाएँ बनाई गई । लेकिन क्या सचमुच किसानों की जिंदगी में इन योजनाओं के कारण बदलाव आ चुका है? क्या वह पहले से अधिक सुधर चुका है? क्या सचमुच उसका परिवार सुखी–समृद्ध जीवन जी पा रहा है? ये ऐसे सवाल हैं जो आज भी मन को बहुत दुःखी करते हैं और उनकी माली हालत पर गंभीरता से सोचने के लिए मजबूर बना देते हैं। शायद इसी कारणवश डॉ. बापूराव देसाई का मन किसान आत्महत्या जैसी गंभीर समस्या पर लिखने के लिए बाध्य हो चुका है । डॉ. देसाई जी ने देश के किसानों की हालत को नजदीकी से देखा

Scanned by CamScanner

अथवा जाना नहीं है, बल्कि कह सकते है कि उन्होंने किसानी बदहाली को भोगा भी है । फलत: वें 'किसान आत्महत्या' नामक निबंध में किसानों के समाने आनेवाले अवरोधों एवं समस्याओं को कभी व्यंग्यात्मक दृष्टि से तो कभी गंभीर रूप से उद्घाटित करते है, साथ ही किसानों को अपना जीवन सुधारने लिए अनेक मार्ग भी बता देते है । इक्कीसवीं सदी में भी भारतीय किसानों की हालत पहले जैसे ही गंभीर बनी हुई है । महाराष्ट्र के साथ देश के कई हिस्सों में किसान आत्महत्या कर रहे हैं । उनकी इस हालत के पीछे अनेक प्राकृतिक कारण तो है ही , साथ ही कई मानव निर्मित कारण भी सहयोग दे रहे है । जों उन्हें आत्महत्या करने के लिए मजबूर बना रहे है । सूद के पैसे कमाने की गाँव के साहूकारों की वृत्ति, अधिक–से–अधिक लाभ कमाने की व्यापारियों की दुष्प्रवृत्ति, देश तथा राज्य सरकारों की अनदेखी और मौकापरस्त लोगों की टुच्ची मानसिकता आदि कई कारणों से किसान की जिंदगी बद–से–बद्दतर बनी हुई है । इसी कारण किसान आत्महत्या करता नजर आता है । अत. निबंधकार बापूराव देसाई देश तथा राज्य सरकारें द्वारों घोषित की गई योजनाओं पर व्यंग्यात्मक प्रहार करते हैं । जों योजनाएँ किसान के जीवन को सुधारने के नाम जरूर पर बनाई गई है, परंतु उन योजनाओं का एक तिहाई हिस्सा भी किसान तक नहीं पहुँचता है । इसी पर व्यंग्यात्मक बाण चलाते हुए डॉ. देसाई लिखते हैं कि "यथार्थ में देश की अधिकतम योजनाएं किसानों के लिए जारी की जाती है; लेकिन कम–से–कम योजनाएँ किसान तक पहूँचती है । फसल उगानेवाला ही भूखा रहता है, आत्महत्या करता है; और आराम, मतलबी हराम का खाकर उसकी आत्महत्या पर भाषण देते है । जो दूसरों को कपड़ा पहनने के लिए कपास देता है , ताज्जुब की बात है कि वो ही नंगा रहता है ! जो दूसरों के लिए धान के साथ–साथ मकान बनाने के लिए सारी वस्तुएँ उत्पादित करता है, वो ही किसान आसमान के नीचे , बरसात , ठंड में जमीन पर बिना आवास का लेटा रहता है । भारत वर्ष से लेकर यूनो तक यू नो सब कहते हैं कि किसान हमारा अन्नदाता है, लेकिन किसान छोडकर सभी भरपेट खाकर डकारते हुए अपच की गोलियाँ खाते हैं और वह तरसकर सोता है।"[५] अत: लेखक इस व्यंग्य कथन के माध्यम से देश की व्यवस्था और आराम परस्त लोगों किसनों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है ।

जहाँ निबंधकार सरकारी योजनाओं की खामियों तथा योजनाओं को बनानेवाली नीतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार करता है, वहीं वह किसान को सबसे ज्यादा मात्रा में लूटनेवाले व्यापरियों पर करारा व्यंग्य कसता है और लगे हाथ उन्हें राक्षस की उपमा ही दे डालता है । यथा– "हमारा खेतीहर लोहंडा भर–भर कर पैसा खर्च करता है। बदले में ये बिचवई उस पर कुदाली से प्रहार करते है! ऐसे बखत में आत्महत्या के सिवाय और कौन–सा लाभ उसके समाने दिखाई देगा। ये व्यापारी राक्षस किसान के परिश्रम पर अवरोध हैं।"[६] उक्त दोनों कथनों में लेखक ने व्यवस्थाओं, अमीरों, व्यापारियों एवं दलालों आदि किसनों का शोषण करने वाले सभी लोगों पर व्यंग्यात्मक मार की है और उन्हें अपनी नीतियों पर सोचने लिए विवश कर दिया है । जहाँ एक ओर लेखक किसान की बदहाली के लिए जिम्मेवार लोगों की कड़ी निंदा करते हुए व्यंग्यात्मक टिप्पणी करता है, वहीं दूसरी ओर वर्तमान भारत में फैली दूषित मनोवृत्तियों पर भी तीखा कटाक्ष करता है। आज हम देख रहे हैं कि हिंदू और मुसलमान इन दो धर्मों लोगों में छोटी–छोटी बातों को लेकर मारकाट अथवा दंगे–फसाद हो रहे हैं । कभी जाति के नाम पर तो कभी धर्म के नाम पर दोनों एक–दूसरे की जान लेने के लिए निकल पडते हैं । अत: इन बेवकूफों को कौन समझाए कि जीवन ईश्वर की देन है । वह चार दिनों के लिए धरती पर अविष्कृत हुआ है । इसे अमन एवं चैन से बिताना ही

Scanned by CamScanner

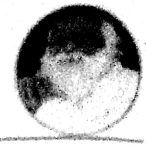

असली धर्म है । परस्पर लड़ाई झगड़ा करके किसी निष्पाप के अनमोल जीवन को समाप्त करना कहाँ का धर्म है? कौन–सा धर्म इसकी इजाजत देता है? क्या हिंदू, क्या मुस्लिम धर्म, क्या क्रिश्चन, क्या बौद्ध धर्म। दुनिया का एक भी धर्म हिंसा करने की इजाजत नहीं देता है, परंतु आज भारत में अपनी संकीर्ण मानसिकता का परिचय देते हुए परस्पर दो धर्मों के बीच दंगे–फसाद आए दिन हो रहे हैं । भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों में कभी धर्म और जाति के नाम पर तो कभी वर्चस्व स्थापित करने की अहंकारी मानसिकता के कारण परस्पर मारकाट एवं घिनौना खून–खराबा जारी है। एक ही धर्म के लोगों के बीच भी वर्चस्व स्थापित करने की झूठी ईच्छा से मारकाट शुरु है । इसका जीता–जागता उदाहरण हमें इराकी आतंकी संगठन आयएसआयएस के रुप में दिखाई दे रहा है । इराक भले ही मुस्लिम बहुल राष्ट्र है और मुस्लिम धर्म में भी अन्य धर्मों की तरह किसी की हिंसा करना जायज नहीं है । परंतु वहाँ के सिया मुसल्मानों का सुन्नी आतंकी संगठन दिन–दहाड़े निघृण हत्याएँ कर रहा है । इससे पूरी दुनिया को सबक लेना चाहिए और ऐसी हरकतें करनेवाले व्यक्तियों एवं संगठनों पर तुरंत कार्रवाई करके उनका समूल नाश करना चाहिए। शायद उन बेवकूफों को यह पता नहीं है कि पहले मनुष्य है, धरती है, धरती पर पलनेवाले असंख्य जीव है । इनकी इफाजत करना और स्वयं की जिंदगी के साथ ही दूसरों की जिंदगी में भी नैतिकता एवं आदर्शता प्रज्ज्वलित करना मनुष्य पहला धर्म होता है । भारत में भी इस तरह के कई गंदी मानसिकता वाले लोग है जो अपने धर्म को श्रेष्ठ एवं दूसरों के धर्म को कनिष्ठ मानते है। इन्हीं लोगों की बदौलत दंगे हो रहे है । अतः लेखक हिंदू और मुस्लिम समुदायों की आपसी टुच्ची मानसिकता पर करारा व्यंग्य कसते हुए अपने 'हयऽऽहृश्यूमऽऽ–हयूऽऽश्यूमऽऽ' नामक व्यंग्यात्मक निबंध में लिखते है कि "इन दोनों में कभी–कभी प्यार इतना उभरकर आता है कि ये घर से तलवारें निकालकर ही बाहर एक दूसरो की माँ–बहनों का उध्दार करते है। देश भर में कई बार ऐसा माहौल कभी मालेगाँव (नासिक), भिवंडी–मुंबई , अहमदाबाद, सुरत, कानपुर, गोधा, धुलियाँ, मुजफरनगर शहरों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।"[5]

हिंदू और मुसलमानों के बीच हो या क्रिश्चन और मुसलमानों के बीच या स्वयं मुस्लिम समुदाय के ही बीच क्यों न हो? जिहाद के नाम पर किसी दूसरे धर्म के मनुष्य को मारने से क्या हासिल होगा? और अगर मान लो कुछ हासिल भी हुआ तो उसे भोगने के लिए आप कितने दिन तक टिके रहोगे ? इस सवाल पर सभी धर्मों के लोगों को गंभीरता से सोचना होगा और 'वसुधैव कुटुम्बकम' की पवित्र भावना को प्रभावी रुप में जीवन मे उतारना होगा । तभी जाकर दुनिया में अमन–शांति प्रस्थापित होगी । सोचने लायक बात यह है कि मनुष्य ही नहीं, बल्कि सभी जीवों को एक ही बार जीवन मिलता है । उसे सुख–शांति से बिताना और भविष्य की पीढियों को भी इसी तरह से जीवन गुजारने लिए प्रवृत्त करना ही ईश्वर, अलाह, येशु, बुद्ध आदि देवताओं एवं महापुरूषों का संदेश है । इससे ही स्वर्ग या जन्नत की प्राप्ति होती है । परंतु भारत में कई हिंदू और कई मुसलमान अक्सर परस्पर भिड़ते दिखाई देते है । अच्छे कार्यों में जुट जाने की बजाए बुरे कार्यों में ही ये अपना अनमोल जीवन बर्बाद करते रहते है । लेखक इन दोनों धर्मों के लोगों की अच्छी–खासी खबर लेता है। यथा–"हमारा धर्म और हम , दूसरों के धर्म की बदनामी कर ही महान बने है , बन सकते है, बनेंगे! भले सप्ताह–सप्ताह नहाएंगे नहीं ; लेकिन इत्र लगाकर खुशबूदार चमकेंगे । दिन भर कुछ नहीं खायेंगे, लेकिन रात को बकरा , मुर्गी, बैल, भैंसा काटकर खायेंगे । अपने धर्म का पालन करेंगे , लेकिन माँ–बहन पर गालियाँ देंगे। महिला की महिमा कथन करते–करते थक जायेंगे, लेकिन चार बीवियों से शादी कर धर्म की दुहाई देंगे ।"[6] उक्त कथन में लेखक

ने मुस्लिम धर्म के लोगो की दुच्ची मानसिकता पर करारा व्यंग्य कसा है । लेखक दोनों धर्मों को केवल यही बताना चाहता है कि धर्म का संकुचित दायरा तोड़कर बाहर निकलना चाहिए और अपने पारिवारिक एवं मनुष्यता के धर्म को सबसे पहले निभाना चाहिए । बाकी धर्म का चोला हमने बाद पहना है। और धर्म का अर्थ यह नहीं होता है कि किसी विशेष समुदाय के लोगों द्वारा स्वीकार किया गया धर्म, धर्म है । उसका तो अर्थ आजीवन सत्य पर चलना अथवा नीति को अपनाकर चलना है । बाद में जाकर मनुष्य की संकुचित एवं स्वार्थी वृत्ति के कारण धर्म का अर्थ भी संकुचित एवं स्वार्थी हो गया है । इस तथ्य को समझना सभी के लिए अनिवार्य है ।

जहाँ लेखक ने भारतीय हिंदू और मुस्लिम धर्म के लोगों की दूषित मनोवृत्तियों पर प्रहार किया है । वहीं वह भारतीय रूढी–परंपराओं, मूल्यों के हो रहे ह्रास, न्यायपालिकाओं की असफलताओं, इक्कीसवीं में दर्शन करने जाने वाले भक्तों की मानसिकताओं आदि पर तीखा व्यंग्य कसा है । 'भयः जय हो ऽऽ मांसाहार।' नमक व्यंग्य मांसाहार करनेवालों की मानकिसताओं पर कटाक्ष करता है । लेखक का कहना है कि मांसाहार करना क्रूरता एवं दयाहीनता है । कभी देवी–देवताओं के नाम पर तो कभी अपनी इच्छा की तृप्ति की खातिर निरापराध पशु–पक्षियों की निघृण हत्या करके उनका मांस भक्षण करना उचित नहीं है । चुँकि –"मांसाहार से विश्व के जलवायू परिवर्तन पर असर होता है; मांसाहार बहुत क्रूर, दयाहीन, नशंस अनैतिक जीवन प्रणाली है ।"[९] भारत में प्राचीन काल से अनेक अनाश्यक परंपराएँ चली आ रही हैं । यहाँ का मांसाहारी समाज अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए भी पशु–पक्षियों की हत्या कर देता है और प्रसाद के नाम पर उनका मांस भक्षण करता है । अतः आज के सभ्य समाज को इन अनैतिकताओं से परहेज करना चाहिए ।

'मोऽऽबाईऽऽलः टॉवर,पुराण' नामक अपने व्यंग्यात्मक निबंध में लेखक ने मोबाईल के प्रति लोगों के आकर्षण पर कटाक्ष किया है । आजकल पूरे भारत में ही नहीं, संपूर्ण विश्व में मोबाईल, इंटरनेट, कम्प्यूटर आदि आवश्यक चीजे बन गई हैं । विशेषतः मोबाईल के प्रति लोगों का आकर्षण कुछ अधिक बढ गया है। भले ही घर में अन्य मूलभूत सुविधाएँ न हो , परंतु मोबाईल जरुर दिखाई देता है । ऐसे में कई लोग इसका सही उपयोग करते हैं , परंतु ज्यादातर लोग दुरुपयोग करते ही नजर आते हैं । ऐसे दुरुपयोग करने वाले लोगों को लेखक ने अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है । कई आदमी अवसर काम निकालने तक ही मोबाईल पर सत्य बोलते हैं और काम हो जाने के बाद अक्सर वें झूठ बोलते रहते हैं। मनुष्य की इसी प्रवृति पर लेखक व्यंग्यात्मक रुप में यूँ प्रकाश डालता है – "मैंने कई सज्जनों को सच बोलते देखा है कि वे शहर में होते, तब कहते ग्राम में हूँ। किसी के साथ मौजमस्ती में होते, तब कहते एक अर्थी के साथ अंतिम यात्रा में हूँ । घर में रहते तो दफ्तर में हूँ। इस प्रकार मोबाईल बार–बार झूठ बोलकर अपने को बचाने वाली एक उत्तम ढ़ाल है। तू डाल–डाल मै पात–पात ।"[१०] इसी तरह से मोबाईल का अक्सर दुरुपयोग होता दिखाई दे रहा है । परंतु दिन–ब–दिन लोगों के मन में इसका आकर्षण बढ़ता ही जा रहा है । आदमी स्वयं की सुद लेने की बजाए निरंतर मोबाईल पर ही लगा रहता है । अगर घर मे कोई महत्त्वपूर्ण कार्य ही क्यों न चल रहा हो? तो भी वह अपने मोबाईल में ही खोया रहता है । आजकल मोबाईल की अहमियत इतनी बढ़ चुकी है कि वह ईश्वर से भी अधिक महत्त्वपूर्ण लगने लगा है। इस पर टिप्पणी करते हुए डॉ. देसाई लिखते है कि "जी नहीं ! वह तो ईश्वर से भी बढ़कर है । यदि भगवान की

Scanned by CamScanner

पूजा चल रही है , और मोबाईल की घंटी बजी, तो भक्त भगवान छोड मोबाईल की सेवा में चला जाता है । पास के आदमी से बात कर रहा है, और उतने में यदि दूसरे शहर के आदमी का फोन आया, तो वो भक्त पास के आदमी से बोलना छोड़कर दूर के आदमी से पहले बात करता है । इस प्रकार मोबाईल नजदीकों से छोड़कर पराए, दूर के लोगों से बातचीत करने के लिए उत्साहित कर देता है । ऐसे कई करिश्मा मोबाईल तथा मोबाईल धारकों से संपन्न होते है ।"[11]

प्रस्तुत संग्रह का 'आरत्यमेव जयते' नामक निबंध न्यायपालिकाओं के कर्मचारियों एवं जजों की कामचोरी , देरी से न्याय दिलाना, जजों की नियुक्तियों में होनेवाला विलंब, किसी वशीलेदार बडे आदमी की जालसाजी के कारण झूठे सबूतों के बल पर किसी ईमानदार आदमी को सजा देना आदि बातों पर लेखक ने तीखा प्रहार किया है । हम देखते हैं कि कई ऐसे बडे नेता, मंत्री, उद्योगपति, फिल्म अभिनेता, अभिनेत्रियाँ, गाँव एवं शहर के मशहूर लोग है, जिन पर अनेक केसेस दर्ज है । आजकल किसी बडे व्यक्ति पर केस दर्ज होना प्रतिष्ठा का विषय बनने लगा है । उन्हें ही बड़ा व्यक्ति कहा जाने लगा है जिन पर उच्च एवं उच्चतम् न्यायालयों में केसेस चल रहे है । उन्हें अखबारों तथा टी.वी. चैनलों की खबरों में प्राथमिकता के साथ दिखाया जा रहा है । पूरे दिन उन्हीं चर्चा चैनलों पर चलती रहती है । न्यायालयों के द्वारा किसी एक केस का निर्णय देने के लिए बीसों साल लग जाते हैं। ऐसे में किसी भी सामान्य व्यक्ति को लगने लगता है कि उस पर भी एकाध केस न्यायालय में दर्ज हो जाना चाहिए, ताकि वह भी बड़ा आदमी कहलाए और उसके भी नाम की चर्चा पूरे दिन टी.वी. चैनलों पर चलती रहे । उसे भी अपराधी घोषित करने उसकी पूरी जिंदगी गुजर जाए। अतः न्यायपालिकाओं के प्रति लोगों की इसी मानसिकता को लेखक स्वयं के माध्यम से यूँ व्यंजित करता है "अपना ही लीजिए ना; प्रारंभ मैं सोच रहा था इतने बडे शहर में , इतने बडे महाराष्ट्र में बडे–बडे लोगों की कोर्ट में केसेस है, लेकिन लानत थी कि मेरी एक भी कोर्ट में केस नहीं थी । मुझे बड़ा दुःख हो रहा था कि मेरी एक भी केस नहीं, मतलब मैं बड़ा नहीं एक तुच्छ–सा आदमी हूँ ! सोचते सोचते भगवान ने भी अगले वर्ष में मेरी पीड़ा सुनकर मुझे बड़ा बना दिया।"[12] उक्त व्यंग्य कथन के द्वारा लेखक ने आजकल की न्यायपालिकाओं की नाकामी एवं असफलताओं पर जोरदार प्रहार किया है ।

अतः कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि पूरा निबंध संग्रह हास्य और व्यंग्य से भरा हुआ है । परंतु केवल हास्य तथा व्यंग्य करने तक ही वह सीमित नहीं रहता है, बल्कि वर्तमान भारत की दुर्दशा पर सभी को गंभीरता से सोचने के लिए मजबूर भी करता है । लेखक ने भारत में फैली जिन–जिन बीमारियों पर अपने व्यंग्य के माध्यम प्रहार किया है । वह व्यंग्य चुभता भी है और लोगों को अपनी हरकतों पर शर्म महसूस करने के लिए भी मजबूर कर देता है । इतना ही नहीं, वह भविष्य में भी ऐसी बुरी हरकतें करने के लिए सौ बार सोचने के लिए विवश कर देता है । इसी में ही लेखक और उनके व्यंग्यात्मक यात्रानुमा निबंध संग्रह की सफलता निहित है ।

Scanned by CamScanner

रयत शिक्षण संस्था का,

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

Main Gate

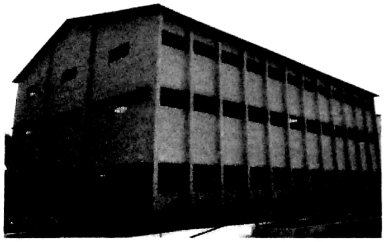

Indoor Sports Complex

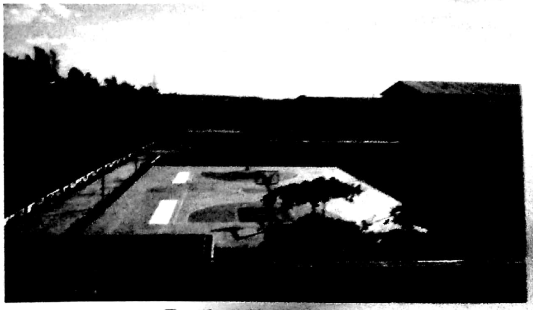

Basket Ball Court

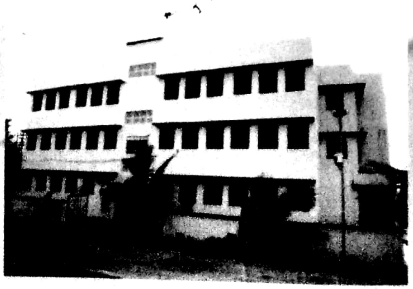

Ladies Hostel

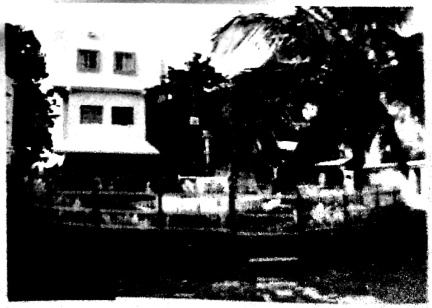

Fountain

Scanned by CamScanner